ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-24 दिसम्बर - II - 2022 अंक-18 माउण्ट आबू Rs.-10

अद्वितीय ब्रह्मा, अनुपम ब्रह्मा, अनुकरणीय ब्रह्मा के नक्शे कदम...

पृथ्वी को थमाने के लिए क्या चाहिए? पवित्रता की शक्ति। उस पवित्रता को शिरोधार्य किया तो किया ब्रह्मा ने, उसकी प्रथम बात की तो की ब्रह्मा ने, निमित्त बनाया नारी को। समाज के मूल्यों को पुनर्निर्धारित करने का काम अगर किसी ने किया तो वो सृष्टि के प्रथम मानव ब्रह्मा ने किया। आधार उसे बनाया जिसे समाज ने दुतकारा, समाज के कुंठित मानसिकता वाले को भी बदल सभी को समाज परिवर्तन के कार्य में नारी को उठाने का बल भरा तो भरा ब्रह्मा ने। लाखों लाख परिवर्तन हुए, दिखे और भविष्य का स्वर्णिम संसार बिल्कुल नज़दीक नज़र आ रहा है। कौन लाया- ब्रह्मा ने। त्याग, तप और सेवा की डगर पर सबको चलाया, ऐसे ब्रह्मा को अद्वितीय ब्रह्मा, अनुपम ब्रह्मा, अनुकरणीय ब्रह्मा, अद्भुत ब्रह्मा अगर कहें तो भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

न समय को रोका जा सकता है, न परिवर्तन को। परिवर्तन के शाश्वत नियम से विधाता की सर्वोच्च कृति से संपूर्ण मानव भी अछूता नहीं रह सका। द्वापर युग आते-आते मानव आत्मा के गुणों रूपी गहनों में काम-क्रोध की मिलावट हो गई और वह अष्टमी के चंद्रमा की तरह आठ कला तक कालिमा भर गई। इस कालिमा ने सतयुगी दैवी संबंधों की भेंट में, स्त्री-पुरूष के आपसी सम्मानजनक संबंधों को भी कालिमा से रंग दिया। पुरूष ने शारीरिक बल के कारण प्रथम दर्जे का नागरिक होने का अंहकार पाल लिया और शारीरिक बल से हीन(मानसिक गुणों में पुरूषों से आगे होते हुए भी) नारी को, दूसरे दर्जे का नागरिक समझे जाने के भयंकर अभिशाप से ग्रस्त कर दिया गया। यहीं से प्रारंभ हुई उसके शोषण और उस पर ढाए जाने वाले अत्याचारों की अचर्चित कहानी।

नारी के प्रति हेय मान्यताएँ

'भोग्या', 'पुरूष की दासी', 'पाँव की जूती', 'नारी की अक्ल उसके वाम पाँव की एड़ी में', 'नारी के लिए पति परमेश्वर,गुरू' चाहे आहार, व्यवहार, विचार, आचार की दृष्टि से भ्रष्ट हो, 'नारी को मार-पीट कर वश में रखना चाहिए', 'ढोल, गंवार, शुद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी', 'नारी नर्क का द्वार'- धर्माचार्यों और समाज के ठेकेदारों द्वारा दी गई उपरोक्त मान्यताओं(वास्तव में कुमान्यताओं, असत्य मान्यताओं, अन्यायपूर्ण मान्यताओं) ने अत्याचारों और शोषण की इस आग में घी का काम किया।

इसमें संदेह नहीं कि समय-समय पर विरले समाज सुधारकों ने नारी की पीड़ा को समझ उसको सबल बनाने के पक्ष में आवाज़ उठाई परंतु उनका वह कार्य थोड़ा सिरे चढ़ने के बाद उनके जाते ही ठण्डे बस्ते में ढ़ल गया।

नर-नारी को पवित्र बनाने की प्रभावशाली जागृति

हमें यहाँ यह कहते हुए कोई संकोच या झिझक नहीं है कि नारी को कामिनी के बजाय कल्याणी और अबला के बजाय शक्तिरूपा बनाने के दुष्कर कार्य को, समाज की कड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए भी पिछले 85 वर्षों से सफलता के शिखर पर ले जाने में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय अथक रूप से प्रवृत्त है। इसके संस्थापक ने 'नारी स्वर्ग का द्वार है' और 'वन्दे मातरम्' का नारा करीब नौ दशक पूर्व लगाया जब किसी कोने में, कोई इस बारे में आवाज़ उठाने की हिम्मत ही नहीं करता था। आध्यात्मिक दृष्टिकोण रखने वाले सभी लोग मानते हैं कि शरीर तो प्रकृति का है, नाशवान है, पाँच तत्वों से बना चोला अथवा पुतला है। तब फिर इसके आधार पर क्या झगड़ा करना? समाज में तो दोनों ही प्रकार के चोलों की ज़रूरत है, विभिन्नता ही सृष्टि की शोभा है तब फिर स्त्री चोले की निन्दा क्यों? इस प्रकार के विचारों से सुसज्जित दादा लेखराज, जो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना के निमित्त बने, कोलकत्ता के एक सुप्रसिद्ध जौहरी थे। वे श्री नारायण के अटूट भक्त और नियमित रूप से श्रीमद्भगवद्गीता का पाठन करते थे। उन्हें सन्1936 में कुछ दिव्य साक्षात्कार हुए जिनमें उन्हें आदेश मिला कि पुरूष और नारी का आपसी संबंध पवित्र स्नेह और आत्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हो। इसके लिए सभी को राजयोग की शिक्षा दी जाए माताओं-कन्याओं को उन्होंने ताकीद(आग्रह) किया कि वे पाश्चात्य बनाव-श्रृंगार का अंधानुकरण न करें, प्रतिदिन सत्संग करें, तामसिक आहार (शराब,माँस,अण्डे) का त्याग करें,अपनी दृष्टि-वृत्ति को शुद्ध बनाएँ तथा सरस्वती, दुर्गा आदि के समान गुणवान, शक्तिवान, कलावान, वैराग्यवान बनें ताकि भारत का कल्याण हो।

सर्वस्व कुर्बान

आज के संसार में जहाँ मनुष्य अपनी खूनजाई कन्या को भी संपत्ति का अधिकार देते हिचकिचाता है क्योंकि वह उसे पराया धन मानता है, पिताश्री ने ऐसा हीरे तुल्य, अनोखा, अद्वितीय,'न भूतो न भविष्यति' कार्य कर दिखाया कि साधारण मानव आश्चर्यानन्द से भर जाता है। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण चल और अचल संपत्ति (जो उस समय लाखों में थी) कन्याओं और माताओं का एक ट्रस्ट(प्रन्यास) बनाकर उन्हें समर्पित कर दी। इस प्रन्यास की मुखिया बनाया एक 18 साल की गुणमूर्त, अध्यात्मप्रिय, ईश्वरीय लगनशील कन्या को जिसे आज हम माँ जगदम्बा सरस्वती के नाम से जानते हैं, उन्होंने धन तो लगाया ही, साथ-साथ तन और मन से भी, वे इस प्रन्यास में समर्पित हो गए और 'वन्दे मातरम्' का नारा लगाते हुए यह घोषणा कर दी कि इस संस्थान की प्रशासनिक मुखिया ओम् राधे(जगदम्बा माँ) है और मैं इनका सेवक मात्र हूँ। इस प्रकार शारीरिक अहंकार में नारी के सामने अपने को ज्ञानी, बुद्धिमान, धन तथा पद-संपन्न समझकर, उसे दबाकर रखने वाले पुरूष समाज के काफिले के सामने पिताश्री ने एक ऐसा चमत्कारिक कार्य कर दिखाया कि 'अपने आप सभी कुछ करके अपने आप छिपाया' वाली उक्ति उन पर पूर्ण चरितार्थ हो गई। निःसंदेह इसके पीछे ईश्वरीय आदेश तो था ही। इस प्रकार नारियों को उठाया।

बाबा द्वारा खोले गए विद्यालयों की उत्तम व्यवस्था को देख सिन्ध के प्रतिष्ठित तथा साधारण जन दोनों ने ही अपने-अपने बच्चों को वहाँ प्रवेश दिलाया और उनके घरों से महिलाएँ तथा कन्याएँ भी सत्संग सुनने आने लगीं।

दादा लेखराज, जिन्हें पिताश्री के सम्मानजनक संबोधन से जाना जाने लगा था, ने संयम-नियम को अपनाकार सुखी जीवन जीने की शिक्षा नर और नारी दोनों को दी। कई युगल तो इसमें ढल गए पर कई जन ऐसे भी थे कि जो शाकाहारी भोजन को 'घास' मानते थे और तामसी भोजन के पूर्णतया शिकार थे। उन्हें पिताश्री की ये शिक्षायें कैसे भा सकती थी? इसलिए उन्हों से सामना होना स्वाभाविक था। नारी को दासी और भोग्या मानने वाले पुरूषों ने अपने-अपने घरों में उन नारियों पर अत्याचार करने आरंभ कर दिए जिन्होंने विषय कुठाराघात से मुक्ति माँगी और तामसिक भोजन को हाथ न लगाने से नम्रतापूर्वक मना कर दिया। यद्यपि वे घर का सब काम करती थीं, पति की सेवा करना अपना कर्त्तव्य मानती थी, बस काम-विकार से मुक्ति चाहने के नाम पर उन पर वो मार पड़ी कि सुनने और देखने वालों की रूह भी काँप जाए। उनके जेवर छीनकर, लात मारकर उन्हें असहाय हालत में घर से बाहर कर दिया गया। वासना, आक्रोश तथा अत्याचार के सामने 'अबला' को डटा देखकर पुरूष की क्रोधाग्नि सातवें आसमान को छूने लगी और उसने उसे ऐसी यातनाएँ दीं, जितनी की अंग्रेज़ सरकार ने भी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वालों को न दी होंगी। परंतु भगवान सर्वसमर्थ हैं और उनकी शिक्षाएँ भी मनोबल बढ़ाने वाली हैं। अत्याचारों के कारण ये कन्याएँ-माताएँ नष्टोमोहा बन गईं, अपने कर्त्तव्य में अडिग हो गईं। इन्होंने त्याग, तप और सेवा की डगर थाम ली और प्रतिज्ञा कर ली- अब हम वासना की जंजीरों से मुक्ति पाकर ही दम लेंगी, हम समाज को प्राचीन देवियों और शक्तियों का कृत्य दोहराकर दिखाएंगी और जिस पुरूष वर्ग ने हम पर अत्याचार किया उनके प्रति भी पवित्र स्नेह और कल्याण की भावना रखकर देश में आध्यात्मिक क्रान्ति लायेंगी।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता, वन्दे मातरम... उक्ति को सार्थक कर साकार करने वाले, नारी में देवत्व का प्राकट्य कर, दैवी मैनर्स अपनाकर, नारी को शिव-शक्ति बनाया, जग से अज्ञान अंधकार मिटाने के निमित्त बनाया। ऐसे महान तपस्वी, नवयुग निर्माता प्रजापिता ब्रह्मा ने अनेकों के जीवन परिवर्तन के राहगीर बने।